कीचड़ का काव्य (काका कालेलकर)

पाठ का परिचय

प्रस्तुत पाठ में लेखक ने कीचड़ उपयोगिता का बखान बहुत ही काव्यात्मक शैली में किया है। लेखक का कथन है कि हमें कीचड़ के गंदेपन पर नहीं: मनुष्यों और पशुओं के लिए उसकी उपयोगिता पर ध्यान देना चाहिए। देश में पैदा होने वाली धान की फसल कीचड़ में ही उगती है। कीचड़ न होता तो क्या-क्या न होता, मानव और पशु किन नियामतों से वंचित रह जाते, इसकी एक बानगी यह पाठ अच्छी प्रकार प्रदर्शित करता है। कीचड़ घृणास्पद नहीं, बल्कि श्रद्धास्पद है यह बात लेखक ही नहीं, बल्कि पाठक भी स्वीकार करता है।

पाठ का सारांश

रंग की शोभा का प्रभाव–रंग की शोभा का प्रभाव बहुत अनोखा होता है। प्रातःकाल की लालिमा के कारण लेखक को उत्तर एवं पूर्व दिशा में कुछ विशेषता दिखाई देती है। उसे लगता है कि सूर्य के आगमन के समय पूर्व दिशा की अपेक्षा उत्तर दिशा में लालिमा अधिक थी, लेकिन वह लालिमा अधिक देर तक नहीं टिक सकी और धीरे-धीरे लालिमा की जगह श्वेत बादलों ने ले ली। इस प्रकार दिन का आरंभ हो गया।

कीचड़ के रंग की महत्ता–लेखक को दुःख है कि हम पृथ्वी, आकाश, जलाशयों आदि का तो वर्णन करते हैं, परंतु कीचड़, जो हर प्रकार से हमारे लिए उपयोगी है, को घृणित समझकर तिरस्कृत कर देते हैं। वास्तव में, कीचड़ और कीचड़ का रंग किसी-न-किसी रूप में हमारे जीवन में शामिल रहता ही है। पुस्तकों के गत्ते, घरों की दीवारें और शरीर के कीमती कपड़े भी कीचड़ के रंग वाले ही पसंद किए जाते हैं।

कलाभिज्ञ (कला की सुंदरता को समझने वाले) लोगों को भट्ठी में पकाए हुए मिट्टी के बरतनों के लिए भी यही रंग अधिक पसंद है। यहाँ तक कि फ़ोटो में दिखाई देने वाले कीचड़ के रंग को 'वार्मटोन' कहकर विद्वान लोग उसकी प्रशंसा करते हैं।

कीचड़ का सौंदर्य–लेखक के अनुसार, कीचड़ का सौंदर्य तब और बढ़ जाता है, जब नदी के किनारे का कीचड़ सूख जाता है। गरमी के कारण जब उसमें दरारें पड़ जाती हैं तो वह बहुत सुंदर प्रतीत होने लगता है। इस दरार पड़ी मिट्टी में पड़ने वाले पशु-पक्षियों के पदचिह्न इसके सौंदर्य को और बढ़ा देते हैं। इसके सूखे हुए टुकड़े खोपरे जैसे जान पड़ते हैं। उस पर चार नाखूनों वाले पैरों से चलते हुए बगुले बहुत सुंदर प्रतीत होते हैं।

बगुलों के पदचिह्न तो लेखक को मध्य एशिया के मार्गों की याद दिला देते हैं। कीचड़ के और अधिक सूखने पर गाय, बैल, पाड़े, भैंस, बकरे आदि उस पर चलने लगते हैं। कभी-कभी मदमस्त पाड़े (भैंस के नर बच्चे) सींग लड़ाकर युद्ध करते हैं तो ऐसा प्रतीत होता है, मानों इस कीचड़ पर महिषासुर और माँ काली के भारतीय युद्ध का पूरा इतिहास ही लिख दिया गया हो।

कीचड़ का आधिक्य–इस पाठ में लेखक गंगा और सिंधु नदी के विशाल किनारों में फैले कीचड़ के सौंदर्य को रेखांकित करना नहीं भूलता। वहाँ कीचड़ की अधिकता के कारण अनोखा मनोरम दृश्य उपस्थित होता है। कीचड़ की अधिकता देखनी हो तो गंगा के किनारे या सिंधु के किनारे जाएँ। यदि इतने से भी तृप्ति न हो तो सीधे खंभात पहुँचना चाहिए। वहाँ महानदी के मुख से आगे जहाँ तक नज़र पहुँचे, वहाँ तक सर्वत्र सनातन कीचड़ ही देखने को मिलेगा। इस कीचड़ में हाथी ही नहीं, पूरे पहाड़ भी विलुप्त हो सकते हैं।

कीचड़ के विषय में कवियों की धारणा एवं तर्क–कीचड़ का हमारे जीवन में अत्यधिक महत्त्व है, क्योंकि हमारा अन्न कीचड़ से ही पैदा होता है। यह अजीब विडंबना है कि कविगण 'पंकज' शब्द सुनकर तो गद्‌गद् हो उठते हैं, किंतु 'पंक' अर्थात् कीचड़ को तुच्छ दृष्टि से देखते हैं। 'कमल' को चाहते हैं, किंतु उसके जन्म स्थान 'मल' से घृणा करते हैं। यदि कवियों को यही तर्कसम्मत बात कही जाए, तो वे उलटे तर्क देते हैं। वे कहते हैं–"वासुदेव (श्रीकृष्ण) की पूजा सभी करते हैं, किंतु वसुदेव की पूजा कोई नहीं करता। हीरे एवं मोती को तो सभी चाहते हैं, किंतु उनके मूल स्रोत क्रमशः कोयले और मातुश्री सीपी को कोई गले नहीं लगाता।" लेखक ऐसे कवियों के साथ माथापच्ची नहीं करना चाहता।

लेखक का संदेश–लेखक कहता है कि यदि मनुष्य को कीचड़ के महत्त्व या उसकी उपयोगिता का ज्ञान होता तो वह कीचड़ को हेय या घृणास्पद न समझता, बल्कि उसके सौंदर्य को पहचानता। कीचड़ हेय नहीं, श्रद्धेय है: लेखक यही तथ्य पाठकों को समझाना चाहता है।

भाग-1

बहुविकल्पीय प्रश्न

गद्यांशों पर आधारित प्रश्न

निर्देश–*निम्नलिखित गद्यांशों को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के सही उत्तर विकल्प चुनकर लिखिए–*

(1) हम आकाश का वर्णन करते हैं, पृथ्वी का वर्णन करते हैं, जलाश्यों का वर्णन करते हैं। पर कीचड़ का वर्णन कभी किसी ने किया है? कीचड़ में पैर डालना कोई पसंद नहीं करता, कीचड़ से शरीर गंदा होता है, कपड़े मैले हो जाते हैं। अपने शरीर पर कीचड़ उड़े यह किसी को भी अच्छा नहीं लगता और इसीलिए कीचड़ के लिए किसी को सहानुभूति नहीं होती। यह सब यथार्थ है, किंतु तटस्था से सोचें तो हम देखेंगे कि कीचड़ में कुछ कम सौंदर्य नहीं है। पहले तो यह कि कीचड़ का रंग बहुत सुंदर है। पुस्तकों के गत्तों पर, घरों की दीवालों पर अथवा शरीर के कीमती कपड़ों के लिए हम सब कीचड़ के जैसे रंग पसंद करते हैं। कलाभिज्ञ लोगों को भट्ठी में पकाए हुए मिट्टी के बरतनों के लिए यही रंग बहुत पसंद है। फोटो लेते समय भी यदि उसमें कीचड़ का, एकाध ठीकरे का रंग आ जाए तो उसे वार्मटोन कहकर विद्वान लोग खुश-खुश हो जाते हैं। पर लो, कीचड़ का नाम लेते ही सब बिगड़ जाता है।

1. किसका वर्णन कभी नहीं किया गया–

(क) आकाश का (ख) पृथ्वी का
(ग) जलाशयों का (घ) कीचड़ का।

2. कौन-सी बात किसी को भी अच्छी नहीं लगती–

(क) अपने ऊपर पुष्प-वर्षा होना (ख) अपने ऊपर कीचड़ उड़ना
(ग) अपने ऊपर पानी बरसना (घ) अपने ऊपर छाया होना।

3. कीचड़ के प्रति किसी को क्या नहीं है–

(क) घृणा (ख) प्रेम
(ग) सहानुभूति (घ) क्रोध।

4. लेखक के अनुसार कीचड़ में किसकी कमी नहीं है–

(क) गीलेपन की (ख) सूखेपन की

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

5. कीचड़ के जैसे रंग को हम किसके लिए पसंद करते हैं–

(क) पुस्तकों के गत्तों के लिए (ख) घरों की दीवालों के लिए

(ग) शरीर के कीमती कपड़ों के लिए (घ) इन सभी के लिए।

उत्तर– 1. (घ) **2.** (ख) **3.** (ग) **4.** (ग) **5.** (घ)।

(2) नदी के किनारे जब कीचड़ सूखकर उसके टुकड़े हो जाते हैं, तब वे कितने सुंदर दिखते हैं। ज़्यादा गरमी से जब उन्हीं टुकड़ों में दरारें पड़ती हैं ओर वे टेढ़े हो जाते हैं, तब सुखाए हुए खोपरे जैसे दिख पड़ते हैं। नदी किनारे मीलों तक जब समतल और चिकना कीचड़ एक-सा फैला हुआ होता है, तब वह दृश्य कुछ कम खूबसूरत नहीं होता। इस कीचड़ का पृष्ठ भाग कुछ सूख जाने पर उन पर बगुले और अन्य छोटे-बड़े पक्षी चलते हैं, तब तीन नाखून आगे और अँगूठा पीछे ऐसे उनके पद्‌चिह्न, मध्य एशिया के रास्ते की तरह दूर-दूर तक अंकित देख इसी रास्ते अपना कारवाँ ले जाने की इच्छा हमें होती है।

फिर जब कीचड़ ज़्यादा सूखकर ज़मीन ठोस हो जाए, तब गाय, बैल, पाड़े, भैंस, भेंड़, बकरे इत्यादि के पदचिह्न उस पर अंकित होते हैं, उसकी शोभा और ही है। और फिर जब दो मदमस्त पाड़े अपने सींगों से कीचड़ को रौंदकर आपस में लड़ते हैं, तब नदी किनारे अंकित पदचिह्न और सींगों के चिह्नों से मानो महिषासुर के भारतीय युद्ध का पूरा इतिहास ही इस कर्दम लेख में लिखा हो-ऐसा भास होता है।

1. नदी किनारे कीचड़ कब सुंदर लगता है–

(क) जब वह दलदल बन जाता है

(ख) जब वह नदी में बह जाता है

(ग) जब सूखकर उसके टुकड़े हो जाते हैं

(घ) जब उसमें कमल खिल जाते हैं।

2. कीचड़ के सूखे टुकड़े जब दरारें पड़ने से टेढ़े हो जाते हैं, तब कैसे लगते हैं–

(क) कमल जैसे (ख) चक्र जैसे

(ग) खोपरे जैसे (घ) चतुर्भुज जैसे।

3. कीचड़ पर अंकित बगुले और अन्य पक्षियों के पदचिह्न कहाँ के मार्ग जैसे लगते हैं–

(क) पूर्वी एशिया (ख) दक्षिणी एशिया

(ग) यूरोप (घ) मध्य एशिया।

4. कीचड़ को रौंदकर कौन लड़ते हैं–

(क) दो मस्त हाथी (ख) दो मदमस्त पाड़े

(ग) दो साँड़ (घ) दो योद्धा।

5. कर्दम लेख में क्या लिखा प्रतीत होता हैं–

(क) महाभारत के युद्ध का इतिहास

(ख) राम-रावण के युद्ध का इतिहास

(ग) महिषासुर के भारतीय युद्ध का इतिहास

(घ) उपर्युक्त में से कोई नहीं।

उत्तर– 1. (ग) **2.** (ग) **3.** (घ) **4.** (ख) **5.** (ग)।

(3) हमारा अन्न कीचड़ में से ही पैदा होता है, इसका जाग्रत भान यदि हर एक मनुष्य को होता तो वह कभी कीचड़ का तिरस्कार न करता। एक अजीब बात तो देखिए। पंक शब्द घृणास्पद लगता है, जबकि पंकज शब्द सुनते ही कवि लोग डोलने और गाने लगते हैं। मल बिलकुल मलिन माना जाता है, किंतु कमल शब्द सुनते ही चित्त में प्रसन्नता और आह्लादकत्व फूट पड़ते हैं। कवियों की ऐसी युक्तिशून्य वृत्ति उनके सामने हम रखें तो वे कहेंगे कि "आप वासुदेव की पूजा करते हैं, इसलिए वसुदेव को तो नहीं पूजते, हीरे का भारी मूल्य देते हैं, किंतु कोयले या पत्थर का नहीं देते और मोती को कंठ में बाँधकर फिरते हैं, किंतु उसकी मातृश्री को गले में नहीं बाँधते!" कम-से-कम इस विषय

1. हमारा अन्न कहाँ उत्पन्न होता है–

(क) नदी में (ख) तालाब में

(ग) मैदान में (घ) कीचड़ में।

2. कौन-सा शब्द घृणास्पद लगता है–

(क) पंकज (ख) जलज

(ग) पंक (घ) रंक।

3. 'पंकज' शब्द सुनते ही कवियों की क्या स्थिति होती है–

(क) वे रोने लगते हैं (ख) वे डोलने लगते हैं

(ग) वे गाने लगते हैं (घ) वे डोलने और गाने लगते हैं।

4. बिलकुल मलिन क्या माना जाता है–

(क) कमल (ख) मल

(ग) दल (घ) दलदल।

5. कवियों की युक्तिशून्य वृत्ति उनके सामने रखने पर वे हमें क्या कहेंगे–

(क) आप वासुदेव की पूजा करते हैं, वसुदेव की नहीं।

(ख) आप हीरे का भारी मूल्य देते हैं, कोयले या पत्थर का नहीं।

(ग) आप मोती को कंठ में धारण करते हैं, उसकी मातुश्री (सीप) को नहीं।

(घ) उपर्युक्त सभी।

उत्तर– 1. (घ) **2.** (ग) **3.** (घ) **4.** (ख) **5.** (घ)।

पाठ पर आधारित प्रश्न

निर्देश– निम्नलिखित प्रश्नों के सही उत्तर विकल्प चुनकर लिखिए–

1. रंग की भारी शोभा कहाँ जमी थी–

(क) पूरब में (ख) उत्तर में

(ग) पश्चिम में (घ) दक्षिण में।

2. रंग की शोभा ने क्या कर दिया–

(क) सबका मन हर लिया (ख) कमाल कर दिया

(ग) सबको दुःखी कर दिया (घ) सबको निराश कर दिया।

3. कीचड़ से क्या होता है–

(क) मन प्रसन्न होता है (ख) शरीर सुशोभित होता है

(ग) शरीर गंदा हो जाता है (घ) इनमें से कोई नहीं।

4. कीचड़ जैसा रंग कौन लोग पसंद करते हैं–

(क) साहित्यकार (ख) संगीतकार

(ग) कलाविज्ञ और फ़ोटोग्राफर (घ) पुजारी और भक्त।

5. कीचड़ कहाँ सुंदर लगता है–

(क) नदी किनारे (ख) घर में

(ग) कपड़ों पर (घ) शरीर पर।

6. 'पंकज' किसे कहते हैं–

(क) नदी को (ख) कीचड़ को

(ग) कमल को (घ) जल को।

7. देखते-ही-देखते बादल कैसे हो गए–

(क) काले बालों जैसे (ख) श्वेत पूनी जैसे

(ग) उड़ते पर्वतों जैसे (घ) रेत की आँधी जैसे।

8. 'कीचड़ का काव्य' पाठ के लेखक का नाम है–

(क) रामविलास शर्मा (ख) धरंजन मालवे

(ग) काका कालेलकर (घ) यशपाल।

9. काका कालेलकर का जन्म कब हुआ–

(क) सन् 1890 में (ख) सन् 1880 में

(ग) सन् 1885 में (घ) सन् 1882 में।

10. काका कालेलकर की मातृभाषा क्या थी–

(क) हिंदी (ख) गुजराती

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

11. लोग क्या करना पसंद नहीं करते हैं–

(क) सौंदर्य प्रसाधन लगाना (ख) बाहर भोजन खाना

(ग) कीचड़ में जाना (घ) कीचड़ से उत्पन्न खाना।

12. लेखक को कीचड़ का सौंदर्य कहाँ पर बहुत सुंदर लगता है–

(क) तटिनी के समीप (ख) समुद्र के किनारे

(ग) तलाब के किनारे (घ) झील के किनारे।

13. लेखक के अनुसार कीचड़ के विशाल स्वरूप को देखने के लिए कौन-सा स्थान उपयुक्त है–

(क) गंगा का किनारा (ख) खंभात

(ग) सिंधु का किनारा (घ) कन्याकुमारी।

14. मनुष्य क्या जानता तो शायद वह कीचड़ से प्रेम करता–

(क) इसमें महत्त्वपूर्ण तत्त्व विद्यमान रहते हैं

(ख) इसमें कमल खिलता है

(ग) अन्न कीचड़ की देन है

(घ) कीचड़ पानी का स्वरूप है।

15. नदी किनारे स्थित कीचड़ की सुंदरता कब बढ़ जाती है–

(क) जब उस पर बच्चे खेलते हैं (ख) जब वह सूख जाता है

(ग) वह बहुत फैल जाता है (घ) जब वह दलदल बन जाता है।

16. ''युक्तिशून्य वृत्ति'' से कवि का क्या आशय है–

(क) विचारहीन कार्य

(ख) तर्कयुक्त कार्य

(ग) अद्‌भुत चमत्कारिक कार्य

(घ) सुंदर और रस से युक्त कार्य।

17. 'आह्लादकत्व' का क्या अर्थ है–

(क) अपेक्षा (ख) उपेक्षा

(ग) हर्ष का भाव (घ) निराशा का भाव।

18. किस शब्द के सुनते ही चित्त में प्रसन्नता और आह्लादकत्व फूट पड़ते हैं–

(क) मल के (ख) दल के

(ग) विमल के (घ) कमल के।

19. 'पंकज' शब्द है–

(क) रूढ़ (ख) यौगिक

(ग) योगरूढ़ (घ) इनमें से कोई नहीं।

20. 'कीचड़ का काव्य' पाठ का उद्‌देश्य क्या है–

(क) कीचड़ की सुंदरता का वर्णन करना

(ख) कीचड़ की उपयोगिता बताना

(ग) कीचड़ की अनुपयोगिता बताना

(घ) कीचड़ को हेय बताना।

उत्तर– **1.** (ख) **2.** (ख) **3.** (ग) **4.** (ग) **5.** (क) **6.** (ग) **7.** (ख) **8.** (ग) **9.** (ग) **10.** (घ) **11.** (ग) **12.** (क) **13.** (ख) **14.** (ग) **15.** (ख) **16.** (क) **17.** (ग) **18.** (घ) **19.** (ग) **20.** (ख)।

भाग-2

(वर्णनात्मक प्रश्न)

निर्देश–*निम्नलिखित प्रश्नों के संक्षिप्त उत्तर लिखिए–*

प्रश्न 1 : कीचड़ की सुंदरता का वर्णन कीजिए।

उत्तर : 'कीचड़ का काव्य' पाठ में लेखक ने 'कीचड़' शब्द को अलग ही रूप में व्यक्त किया है। उन्होंने यह समझाने का प्रयास किया है कि जिस कीचड़ से लोग घृणा करते हैं, उसमें भी सौंदर्य है। उसका रंग बहुत मनमोहक होता है। घर की दीवारों पर, कपड़ों पर और तसवीरों में इसी रंग को अधिक पसंद किया जाता है।

प्रश्न 2 : रंग की शोभा ने आज क्या कर दिया?

उत्तर : रंग की शोभा ने आज सुबह कमाल कर दिया था। आज रंग की सारी शोभा उत्तर में थी। उत्तर दिशा लाल हो गई थी, लेकिन वह लाली अधिक देर नहीं टिक सकी और थोड़ी देर बाद ही उत्तर दिशा श्वेत बादलों के कारण श्वेत पूनी जैसी हो गई।

प्रश्न 3 : किसी ने कभी कीचड़ का वर्णन क्यों नहीं किया?

उत्तर : कीचड़ से लोग घृणा करते हैं, उसमें पैर डालना किसी को पसंद नहीं है, कीचड़ से कपड़े गंदे हो जाते हैं। कीचड़ का सौंदर्य, महत्ता और उपयोगिता किसी को दिखाई नहीं देती, इसलिए किसी ने कभी कीचड़ का वर्णन नहीं किया।

प्रश्न 4 : कीचड़ की अधिकता कहाँ देखी जा सकती है? पाठ के आधार पर उत्तर दीजिए।

उत्तर : कीचड़ देखना हो तो गंगा या सिंधु नदी के किनारे देखिए और यदि इससे भी तृप्ति न हो तो सीधे खंभात पहुँचना चाहिए। वहाँ महानदी के मुख से आगे जहाँ तक नज़र जाएगी, वहाँ तक कीचड़-ही-कीचड़ दिखाई देगा। यह कीचड़ इतना गहरा है कि इसमें हाथी ही नहीं, पहाड़ भी डूब सकता है।

प्रश्न 5 : कीचड़ के प्रति किसी को सहानुभूति क्यों नहीं होती?

उत्तर : कीचड़ को लोग गंदा मानते हैं, कोई भी कीचड़ में पैर डालना पसंद नहीं करता, कीचड़ से शरीर गंदा होता है; कपड़े मैले हो जाते हैं। अपने शरीर पर कीचड़ उड़े यह कोई नहीं पसंद करता। इसीलिए किसी को कीचड़ से सहानुभूति नहीं होती।

प्रश्न 6 : 'पंक' और 'पंकज' शब्द में क्या अंतर है?

उत्तर : 'पंक' शब्द का अर्थ है–कीचड़ और 'पंकज' शब्द का अर्थ है–कीचड़ में उत्पन्न होने वाला अर्थात् कमल।

प्रश्न 7 : पाठ के आधार पर नदी किनारे के कीचड़ का वर्णन अपने शब्दों में कीजिए।

उत्तर : नदी किनारे मीलों तक फैला समतल और चिकना कीचड़ बहुत सुंदर लगता है। इस कीचड़ के पृष्ठभाग के कुछ सूख जाने पर जब उस पर बगुले और अन्य पक्षी चलते हैं तो तीन नाखून आगे और अँगूठा पीछे ऐसे उनके पदचिह्न मध्य एशिया के रास्ते की तरह दूर-दूर तक देखे जा सकते हैं। यह सारा दृश्य बहुत ही आकर्षक होता है।

प्रश्न 8 : कीचड़ जैसा रंग कौन लोग पसंद करते हैं?

उत्तर : प्रायः सभी लोग पुस्तकों के गत्तों पर, घर की दीवारों पर तथा शरीर पर पहने कीमती कपड़ों के लिए कीचड़ जैसा रंग पसंद करते हैं। कलाभिज्ञों को मिट्‌टी के बरतनों के लिए तथा फोटोग्राफरों को भी कहीं-कहीं कीचड़ जैसा रंग पसंद है।

प्रश्न 9 : कवियों की कौन-सी बात युक्तिशून्य लगती है?

उत्तर : कविजन 'पंक' से घृणा करते हैं। उसे वे घृणित उपमान के रूप में प्रयोग करते हैं, जबकि 'पंकज' शब्द सुनते ही उनका मन प्रसन्न हो जाता है। उसे वे सुंदर उपमान के लिए प्रयोग करते हैं। जबकि 'पंक' और पंकज में पिता-पुत्र का संबंध है। इसी तरह 'मल' को बिलकुल मलिन (गंदा) माना जाता है, किंतु 'कमल' शब्द सुनते ही मन प्रसन्न हो उठता है। अतः कवियों की ये बातें युक्तिशून्य लगती हैं।

प्रश्न 10 : कीचड़ सुखाए हुए खोपरे जैसा कब दिखता है?

उत्तर : अधिक गरमी के कारण जब सूखे कीचड़ में दरारें पड़ जाती हैं और उसके टेढ़े-मेढ़े टुकड़े हो जाते हैं, तब वे टुकड़े सुखाए हुए खोपरे जैसे दिखते हैं।

प्रश्न 11 : मनुष्य कीचड़ का तिरस्कार क्यों करता है?

उत्तर : मनुष्य कीचड़ का तिरस्कार उसकी उपयोगिता और महत्ता से अनभिज्ञ होने के कारण करता है। उसे इस बात का भान नहीं है कि जिस अन्न से वह जीवन धारण किए हुए है, वह कीचड़ में ही उत्पन्न होता है।

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

प्रश्न 12 : नदी के किनारे कीचड़ कब सुंदर दिखता है?

उत्तर : नदी के किनारे जब कीचड़ सूखकर उसके टुकड़े हो जाते हैं, तब वह बहुत सुंदर लगता है। गरमी से जब इन टुकड़ों में दरारें पड़ती हैं और वे टेढ़े हो जाते हैं, तब ये टुकड़े सुखाए खोपरें जैसे दिखाई पड़ते हैं। नदी किनारे मीलों तक फैला समतल कीचड़ और थोड़े-से सूख चुके कीचड़ पर बगुलों और अन्य पक्षियों के पंजों से युक्त कीचड़ भी बहुत सुंदर लगता है।

प्रश्न 13 : लोग कीचड़ से किस-किस प्रकार घृणा करते हैं?

उत्तर : लोग कीचड़ में पैर डालना पसंद नहीं करते, कीचड़ से शरीर गंदा हो जाता है, कपड़े मैले हो जाते हैं। अपने ऊपर कीचड़ उड़े यह किसी को अच्छा नहीं लगता।

प्रश्न 14 : कवियों की धारणा को लेखक ने युक्तिशून्य क्यों कहा है?

उत्तर : कवियों की धारणा को लेखक ने युक्तिशून्य इसलिए कहा है; क्योंकि 'पंक' शब्द कवियों को घृणास्पद लगता है, जबकि 'पंकज' शब्द के पीछे वे आह्लादित रहते हैं। वे 'मल' को मलिन मानते हैं, लेकिन कमल को सिर से लगाते हैं। उनकी यह विरोधाभासी स्थिति ही उन्हें युक्तिशून्य बनाती है।

प्रश्न 15 : ज़मीन ठोस होने पर उस पर किनके पदचिह्न अंकित होते हैं?

उत्तर : जब कीचड़ ज़्यादा सूखकर ज़मीन ठोस हो जाती है, तब गाय, बैल, पाड़े, भैंस, भेड़, बकरे इत्यादि के पदचिह्न उस पर अंकित हो जाते हैं। उसकी शोभा बहुत निराली होती है। जब दो मस्त पाड़े अपने सींगों से रौंदकर आपस में लड़ते हैं, तब उनके पैरों और सींगों के चिह्नों से वहाँ महिषासुर के भारतीय युद्ध का पूरा इतिहास लिखा दिखाई देता है।

प्रश्न 16 : कीचड़ सूखकर किस प्रकार के दृश्य उपस्थित करता है?

उत्तर : सूखकर जब कीचड़ के टुकड़े हो जाते हैं, तब वे टुकड़े सुखाए हुए खोपरे जैसे लगते हैं। कीचड़ के पृष्ठभाग के थोड़ा सूख जाने पर जब उस पर बगुले और अन्य छोटे-बड़े पक्षी चलते हैं तो उनके पदचिह्न मध्य एशिया के रास्ते की तरह दिखाई देते हैं। ज़्यादा सूखकर जब ज़मीन ठोस हो जाती है तो उस पर गाय, बैल, पाड़े, भैंस, भेड़, बकरे आदि के पदचिह्न अंकित हो जाते हैं, उनकी शोभा बहुत ही निराली होती है। दो पाड़ों के लड़ने से उनके सींगों और पैरों के जो चिह्न कीचड़ पर अंकित होते हैं उनसे महिषासुर के युद्ध के इतिहास का दृश्य उपस्थित होता है।

प्रश्न 17 : मनुष्य कीचड़ का तिरस्कार कब नहीं करता?

उत्तर : यदि मनुष्य को यह भान होता कि उसका पेट भरने वाला अन्न कीचड़ में ही पैदा होता है तो वह कभी भी कीचड़ का तिरस्कार न करता।

प्रश्न 18 : कीचड़ का रंग किन-किन लोगों को खुश करता है?

उत्तर : कीचड़ का रंग श्रेष्ठ कलाकारों, चित्रकारों, मूर्तिकारों और छायाकारों (फोटोग्राफरों) को खुश करता है। वे भट्ठी में पकाए गए बरतनों पर यही रंग करना पसंद करते हैं। छायाकार भी जब फोटो खींचते हैं तो कुछ जगह पर कीचड़ का या एकाध ठीकरे को उसमें समाहित कर उसका रंग लाना पसंद करते हैं। वे इसे वार्मटोन अर्थात् पक्के रंग की झलक या ऊष्मा की झलक कहकर खुश होते हैं। इसके अतिरिक्त आम लोग अपने घरों की दीवालों पर, पुस्तकों के गत्तों पर और कीमती कपड़ों पर भी यही रंग देखना अधिक पसंद करते हैं।

प्रश्न 19 : सूखे हुए कीचड़ का सौंदर्य किन स्थानों पर दिखाई देता है?

उत्तर : सूखे हुए कीचड़ का सौंदर्य नदी के किनारों पर दिखाई देता है। थोड़ा-सा सूखे कीचड़ पर बने बगुले आदि पक्षियों के पदचिह्न और फिर कीचड़ के ज़्यादा सूखकर ज़मीन ठोस होने पर उस पर बने गाय, बैल, पाड़े, भैंस, भेड़, बकरे आदि के पदचिह्नों का सौंदर्य व्यक्ति को अच्छा लगता है। भैंसों के झुंड जब सींग भिड़ाकर युद्ध करते हैं तो कीचड़ पर बने उसके निशान बहुत शोभावान् प्रतीत होते हैं।

प्रश्न 20 : पहाड़ लुप्त कर देने वाले कीचड़ की क्या विशेषता है?

उत्तर : खंभात में महानदी के मुख से आगे जहाँ तक नज़र पहुँचे, वहाँ तक सर्वत्र सनातन कीचड़ ही दिखाई पड़ता है। यह इतना विस्तृत एवं गहरा कीचड़ होता है कि उसमें हाथी तो क्या, पहाड़ भी उसके अंदर समा जाए। आशय यह है कि यह कीचड़ ज़मीन के नीचे बहुत गहराई तक होता है।

प्रश्न 21 : कीचड़ के प्रति हमारा दृष्टिकोण तटस्थ क्यों नहीं है? 'कीचड़ का काव्य' पाठ के आधार पर बताइए।

उत्तर : कीचड़ के प्रति हमारा दृष्टिकोण तटस्थ इसलिए नहीं है; क्योंकि हम कीचड़ के बाहरी रूप को देखकर उसे गंदा मान लेते हैं। उसकी उपयोगिता पर हम कभी ध्यान नहीं देते। हम यह नहीं सोचते कि सारा अन्न कीचड़ में से उत्पन्न होता है और सौंदर्य का उपमान 'पंकज' तथा 'कमल' भी इसी कीचड़ में उत्पन्न होता है।

प्रश्न 22 : 'नदी किनारे अंकित पदचिह्न और सींगों के चिह्नों से मानो महिषासुर के भारतीय युद्ध का पूरा इतिहास ही इस कर्दम लेख में लिखा हो ऐसा भास होता है।'– आशय स्पष्ट कीजिए।

उत्तर : नदी किनारे के थोड़े सूख चुके गीले कीचड़ में जब दो पाड़े (दो युवा भैंसे) सींगों से कीचड़ को रौंदकर आपस में लड़ते हैं तो उस कीचड़ की स्थिति वैसी हो जाती है, जैसी महिषासुर और उसकी सेना के माँ काली से हुए भयंकर युद्ध के समय पृथ्वी की हो गई थी। यह कीचड़ भारतीय संस्कृति और इतिहास के उसी युद्ध का वर्णन करता आलेख प्रतीत होता है।

प्रश्न 23 : 'कीचड़ का काव्य' पाठ में किस विषय का प्रतिपादन किया गया है?

उत्तर : काका कालेलकर ने प्रस्तुत पाठ में कीचड़ की उपयोगिता का वर्णन काव्यात्मक शैली में किया है। वे कहते हैं कि हमें कीचड़ से घृणा नहीं करनी चाहिए, बल्कि मानव और पशुओं के लिए उसके महत्त्व को समझना चाहिए। हमें सोचना चाहिए कि यदि कीचड़ न होता तो क्या-क्या न होता। मनुष्य के जीवन का आधार अन्न कीचड़ से ही उत्पन्न होता है; अतः इतने महत्त्वपूर्ण और उपयोगी कीचड़ से घृणा नहीं करनी चाहिए। कीचड़ की उपयोगिता सिद्ध करना ही इस पाठ का मुख्य विषय है।

प्रश्न 24 : "आप वासुदेव की पूजा करते हैं, किंतु वसुदेव को तो नहीं पूजते, हीरे का भारी मूल्य देते हैं, किंतु कोयले या पत्थर को महत्त्व नहीं देते और मोती को कंठ में बाँधकर फिरते हैं, किंतु उसकी मातुश्री को गले में नहीं बाँधते।" कम-से-कम इस विषय पर कवियों के साथ तो चर्चा न करना ही उत्तम! – आशय स्पष्ट कीजिए।

उत्तर : **आशय**– प्रस्तुत पंक्ति में कवियों की धारणा को युक्तिशून्य कहने पर उनकी क्या प्रतिक्रिया होगी यह बताया गया है। यदि कवियों से कहा जाए कि वे पंक से घृणा करते हैं और पंकज से प्रेम, तो वे उलटा हमसे प्रश्न करेंगे कि आप वासुदेव की पूजा करते हैं; लेकिन वसुदेव की नहीं, हीरे का मूल्य देते हैं, कोयले या पत्थर का नहीं, मोती को गले में धारण करते हैं, उसकी जननी सीपी को नहीं। अतः कवियों से कीचड़ की महत्ता पर बात करना उचित नहीं है।

प्रश्न 25 : लेखक को नदी किनारे अंकित पशुओं के पदचिह्नों तथा सींगों के चिह्नों में महिषासुर युद्ध का इतिहास लिखा होने का आभास क्यों होता है?

उत्तर : लेखक यहाँ कहना चाहता है कि नदी किनारे का कीचड़ जब सूखकर ठोस हो जाता है और उसके बीच जब दो मदमस्त पाड़े (भैंस के नर बच्चे) अपने पैरों तथा सींगों से कीचड़ को रौंदकर आपस में लड़ते हैं, तब नदी के किनारे अंकित उनके पदचिह्नों एवं सींगों के निशानों को देखकर यह आभास होता है कि महिषासुर तथा उसकी सेना के माँ काली से हुए भयंकर युद्ध का समग्र इतिहास ही इस कीचड़ पर लिख दिया गया है। हमारे पौराणिक साहित्य में महिषासुर और माँ के मध्य हुए भीषण युद्ध का विस्तृत

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

वर्णन मिलता है। इस युद्ध में महिषासुर तथा उसकी सेना ने संपूर्ण पृथ्वी को अपने पैरों तथा सींगों से बुरी तरह रौंद दिया था।
वस्तुतः यह लेखक की कल्पना है, जिसके माध्यम से वह कीचड़ के रचनात्मक सौंदर्य की सृष्टि कर रहा है। यहाँ सूखे हुए कीचड़ में अंकित भैंसों के पदचिह्नों एवं सींगों के निशानों को ऐतिहासिक धरातल प्रदान करते हुए लेखक द्वारा उसे विशिष्ट बनाने की सफल कोशिश की गई है।

प्रश्न 26 : 'कीचड़ का काव्य' पाठ के लेखक कवियों से उनकी युक्तिशून्य धारणा को उनके सामने क्यों नहीं रखना चाहते?

उत्तर : कवियों की धारणा में 'पंक' शब्द घृणास्पद है, जबकि पंक में उत्पन्न 'पंकज' शब्द सुनकर वे खुशी से डोलने लगते हैं। 'मल' को उनकी दृष्टि में बिलकुल मलिन माना जाता है, जबकि 'कमल' शब्द सुनते ही चित्त में प्रसन्नता और आह्लादकत्व फूट पड़ते हैं। लेखक कहता है कि यदि कवियों से उनकी इस युक्तिशून्य धारणा के विषय में पूछा जाए कि वह ऐसी युक्तिशून्य धारणा अपने मन में क्यों पाले रखते हैं तो वे उलटा हमसे यह प्रश्न पूछेंगे कि आप वासुदेव की पूजा करते हैं, लेकिन उनके पिता वसुदेव की पूजा नहीं करते; आप हीरे का भारी मूल्य देते हैं, लेकिन कोयले या पत्थर का नहीं; आप मोती को गले में धारण करते हैं, लेकिन उसकी जननी सीपी को धारण नहीं करते। कवियों के इन कुतर्कों का लेखक के पास कोई उत्तर नहीं है, इसलिए वह उनकी युक्तिशून्य धारणा को उनके सामने नहीं रखना चाहता।

प्रश्न 27 : "कीचड़ हेय नहीं, श्रद्धेय है" इसका आशय स्पष्ट कीजिए।

उत्तर : लेखक ने कीचड़ को हेय दृष्टि से देखने के कारण को स्पष्ट करते हुए कहा है कि लोग कीचड़ को गंदा मानते हैं। उसको छूने से कपड़े मैले हो जाते हैं। कोई न तो अपने कपड़ों पर कीचड़ के छींटे देखना चाहता है, न ही उसमें पैर डालना पसंद करता है। कारण एक ही है कि हम उसे गंदा, दूषित, अस्पृश्य और घृणित समझकर उसे हेय दृष्टि से देखते हैं।
लेखक ने कीचड़ की उपयोगिता स्पष्ट करते हुए कहा है कि कीचड़ में ही कमल पैदा होता है, जो पूजनीय है। हमारा अन्न कीचड़ से ही पैदा होता है, जिसके बिना जीवनयापन करना संभव नहीं है। इसलिए कीचड़ को हेयता नहीं, श्रद्धा की दृष्टि से देखना चाहिए। लेखक कहता है कि हमें कीचड़ के गंदेपन पर नहीं, अपितु मानव और पशुओं के जीवन में उसकी उपयोगिता पर ध्यान देना चाहिए। उत्तर-पूर्वी राज्यों में सबसे ज़्यादा पैदा होने वाली धान की फसल कीचड़ में ही उग पाती है। कीचड़ न होता तो मानव और पशु दोनों ही अनेक उपलब्धियों से वंचित रह जाते। इसलिए यह कहना उचित होगा कि कीचड़ हेय नहीं श्रद्धेय है।

प्रश्न 28 : 'कीचड़ का काव्य' पाठ के लेखक ने कीचड़ की क्या महत्ता बताई है? स्पष्ट कीजिए।

उत्तर : लेखक के अनुसार कीचड़ का हमारे जीवन में अत्यधिक महत्त्व है; क्योंकि हमारे जीवन का आधार अन्न कीचड़ में ही उत्पन्न होता है तथा कीचड़ के रंगों का भी हमारे जीवन में बहुत महत्त्वपूर्ण स्थान है। कीचड़ को न पसंद करने वाले भी कीचड़ के रंगों का प्रयोग अपनी जीवनशैली में करते हैं। हम कीचड़ के रंगों का प्रयोग पुस्तकों के गत्तों, घरों की दीवारों और कीमती कपड़ों के लिए करते हैं। कीचड़ का रंग लोगों को अलग-अलग तरह से आकर्षित करता है; जैसे–कीचड़ का रंग श्रेष्ठ कलाकारों, चित्रकारों, मूर्तिकारों और छायाकारों (फोटोग्राफरों) को खुश करता है। वे भट्ठी में पकाए गए बरतनों पर यही रंग लगाना पसंद करते हैं। छायाकार भी कीचड़ जैसा रंग देना पसंद करते हैं। वे इसे 'वार्मटोन' अर्थात् ऊष्मा की झलक कहकर खुश होते हैं। इसके अतिरिक्त सूखे कीचड़ पर बने पशु-पक्षियों के पदचिह्न भी उसकी सुंदरता को और बढ़ा देते हैं।
इस प्रकार लेखक के द्वारा प्रस्तुत पाठ में कीचड़ की जीवनोपयोगिता तथा उसके भौतिक महत्त्व को रेखांकित किया गया है। लेखक काका कालेलकर ने कीचड़ के महत्त्व को अत्यंत काव्यात्मक शैली में प्रस्तुत किया है।

अभ्यास प्रश्न

निर्देश– *निम्नलिखित गद्यांश को पढ़कर दिए गए प्रश्नों के सही उत्तर विकल्प चुनकर लिखिए–*

हमारा अन्न कीचड़ में से ही पैदा होता है, इसका जाग्रत भान यदि हर एक मनुष्य को होता तो वह कभी कीचड़ का तिरस्कार न करता। एक अजीब बात तो देखिए। पंक शब्द घृणास्पद लगता है, जबकि पंकज शब्द सुनते ही कवि लोग डोलने और गाने लगते हैं। मल बिलकुल मलिन माना जाता है, किंतु कमल शब्द सुनते ही चित्त में प्रसन्नता और आह्लादकत्व फूट पड़ते हैं। कवियों की ऐसी युक्तिशून्य वृत्ति उनके सामने हम रखें तो वे कहेंगे कि "आप वासुदेव की पूजा करते हैं, इसलिए वसुदेव को तो नहीं पूजते, हीरे का भारी मूल्य देते हैं, किंतु कोयले या पत्थर का नहीं देते और मोती को कंठ में बाँधकर फिरते हैं, किंतु उसकी मातुश्री को गले में नहीं बाँधते!" कम-से-कम इस विषय पर कवियों के साथ तो चर्चा न करना ही उत्तम है।

1. **हमारा अन्न कहाँ उत्पन्न होता है–**
   (क) नदी में (ख) तालाब में
   (ग) मैदान में (घ) कीचड़ में।
2. **कौन-सा शब्द घृणास्पद लगता है–**
   (क) पंकज (ख) जलज
   (ग) पंक (घ) रंक।
3. **'पंकज' शब्द सुनते ही कवियों की क्या स्थिति होती है–**
   (क) वे रोने लगते हैं (ख) वे डोलने लगते हैं
   (ग) वे गाने लगते हैं (घ) वे डोलने और गाने लगते हैं।
4. **बिलकुल मलिन क्या माना जाता है–**
   (क) कमल (ख) मल
   (ग) दल (घ) दलदल।
5. **कवियों की युक्तिशून्य वृत्ति उनके सामने रखने पर वे हमें क्या कहेंगे–**
   (क) आप वासुदेव की पूजा करते हैं, वसुदेव की नहीं।
   (ख) आप हीरे का भारी मूल्य देते हैं, कोयले या पत्थर का नहीं।
   (ग) आप मोती को कंठ में धारण करते हैं, उसकी मातुश्री (सीप) को नहीं।
   (घ) उपर्युक्त सभी।

निर्देश– *निम्नलिखित प्रश्नों के सही उत्तर विकल्प चुनकर लिखिए–*

6. **'पंकज' किसे कहते हैं–**
   (क) नदी को (ख) कीचड़ को
   (ग) कमल को (घ) जल को।
7. **काका कालेलकर की मातृभाषा क्या थी–**
   (क) हिंदी (ख) गुजराती
   (ग) अंग्रेज़ी (घ) मराठी।

निर्देश– *निम्नलिखित प्रश्नों के संक्षिप्त उत्तर लिखिए–*

8. **कीचड़ की सुंदरता का वर्णन कीजिए।**
9. **कीचड़ सुखाए हुए खोपरे जैसा कब दिखता है?**

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in